

# संतोषी माता चालीसा (Santoshi Mata Chalisa)

## ॥संतोषी माता चालीसा ॥

भक्तन को सन्तोष दे सन्तोषी तव नाम ।  
कृपा करहु जगदम्ब अब आया तेरे धाम ॥

### ॥ चौपाई ॥

जय सन्तोषी मात अनूपम ।  
शान्ति दायिनी रूप मनोरम ॥

सुन्दर वरण चतुर्भुज रूपा ।  
वेश मनोहर ललित अनुपा ॥

श्वेताम्बर रूप मनहारी ।  
माँ तुम्हारी छवि जग से न्यारी ॥

दिव्य स्वरूपा आयत लोचन ।  
दर्शन से हो संकट मोचन ॥ 4 ॥

जय गणेश की सुता भवानी ।  
रिद्धि- सिद्धि की पुत्री ज्ञानी ॥

अगम अगोचर तुम्हरी माया ।  
सब पर करो कृपा की छाया ॥

नाम अनेक तुम्हारे माता ।  
अखिल विश्व है तुमको ध्याता ॥

तुमने रूप अनेकों धारे ।  
को कहि सके चरित्र तुम्हारे ॥ 8 ॥

धाम अनेक कहाँ तक कहिये ।  
सुमिरन तब करके सुख लहिये ॥

विन्ध्याचल में विन्ध्यवासिनी ।  
कोटेश्वर सरस्वती सुहासिनी ॥

कलकत्ते में तू ही काली ।  
दुष्ट नाशिनी महाकराली ॥

सम्बल पुर बहुचरा कहाती ।  
भक्तजनों का दुःख मिटाती ॥ 12 ॥

ज्वाला जी में ज्वाला देवी ।  
पूजत नित्य भक्त जन सेवी ॥

नगर बम्बई की महारानी ।  
महा लक्ष्मी तुम कल्याणी ॥

मदुरा में मीनाक्षी तुम हो ।  
सुख दुख सबकी साक्षी तुम हो ॥

राजनगर में तुम जगदम्बे ।  
बनी भद्रकाली तुम अम्बे ॥ 16 ॥

पावागढ़ में दुर्गा माता ।  
अखिल विश्व तेरा यश गाता ॥

काशी पुराधीश्वरी माता ।  
अन्नपूर्णा नाम सुहाता ॥

सर्वानन्द करो कल्याणी ।  
तुम्हीं शारदा अमृत वाणी ॥

तुम्हरी महिमा जल में थल में ।  
दुःख दारिद्र सब मेटो पल में ॥ 20 ॥

जेते ऋषि और मुनीशा ।  
नारद देव और देवेशा ।

इस जगती के नर और नारी ।  
ध्यान धरत हैं मात तुम्हारी ॥

जापर कृपा तुम्हारी होती ।  
वह पाता भक्ति का मोती ॥

दुःख दारिद्र संकट मिट जाता ।  
ध्यान तुम्हारा जो जन ध्याता ॥ 24 ॥

जो जन तुम्हरी महिमा गावै ।  
ध्यान तुम्हारा कर सुख पावै ॥

जो मन राखे शुद्ध भावना ।  
ताकी पूरण करो कामना ॥

कुमति निवारि सुमति की दात्री ।  
जयति जयति माता जगधात्री ॥

शुक्रवार का दिवस सुहावन ।  
जो व्रत करे तुम्हारा पावन ॥ 28 ॥

गुड़ छोले का भोग लगावै ।  
कथा तुम्हारी सुने सुनावै ॥

विधिवत पूजा करे तुम्हारी ।  
फिर प्रसाद पावे शुभकारी ॥

शक्ति-सामरथ हो जो धनको ।  
दान-दक्षिणा दे विप्रन को ॥

वे जगती के नर औ नारी ।  
मनवांछित फल पावें भारी ॥ 32 ॥

जो जन शरण तुम्हारी जावे ।  
सो निश्चय भव से तर जावे ॥

तुम्हरो ध्यान कुमारी ध्यावे ।  
निश्चय मनवांछित वर पावै ॥

सधवा पूजा करे तुम्हारी ।  
अमर सुहागिन हो वह नारी ॥

विधवा धर के ध्यान तुम्हारा ।  
भवसागर से उतरे पारा ॥ 36 ॥

जयति जयति जय संकट हरणी ।  
विघ्न विनाशन मंगल करनी ॥

हम पर संकट है अति भारी ।  
वेगि खबर लो मात हमारी ॥

निशिदिन ध्यान तुम्हारो ध्याता ।  
देह भक्ति वर हम को माता ॥

यह चालीसा जो नित गावे ।  
सो भवसागर से तर जावे ॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

संतोषी माँ के सदा बंदहूँ पग निश वास ।  
पूर्ण मनोरथ हो सकल मात हरौ भव त्रास ॥

॥ इति श्री संतोषी माता चालीसा ॥

\*\*\*\*\*

## Santoshi Mata Chalisa (in English)

bhakton ko santosh de santoshee tav naam ॥  
krpa karahu jagadamb ab aaya tere dhaam ॥

### ॥ chaupae ॥

jay santoshee maatopam ॥  
shaanti daayinee roop manoram ॥

sundar varn chaturbhuj roopa ॥  
ve manohar lalit anupa ॥

vaaltetaambar roop manahaaree ॥  
maan banee chhavi jag se nyaaree ॥

divy svaroop aayat lochan ॥  
darshan se ho sankat mochan ॥ 4 ॥

jay ganesh kee suta bhavaanee ॥  
riddhi-siddhi kee putree gyaanee ॥

agam agochar tumhaaree maaya ॥  
sab par karo krpa kee chhaaya ॥

naam anek faif maata ॥  
sampoorn angrejee hai tumako dhyaata ॥

tum roop anekon dhaare ॥  
ko kahi saake charitra ॥ 8 ॥

dhaam anek kahaan tak kahiye ॥  
sumiran tab karake sukh lahae ॥

vindhyaachal mein vindhyavaasinee ॥  
koteshtar sarasvatee suhaasinee ॥

kalakatte mein too hee kaalee ॥  
dusht naashinee mahaakaraalee ॥

sambal pur bahuchara kahaatee ॥  
bhakton ka dukh dukhatee ॥ 12 ॥

boot jee mein boot devee ॥  
poojat nity bhakt jan sevee ॥

nagar bambee kee mahaaraanee ॥  
maha lakshmee tum kalyaanee ॥

madura mein meenaakshee tum ho ॥  
sukh dukh gavaah tum ho ॥

raajanagar mein tum jagadambe ॥  
basee bhadraakaalee tum ambe ॥ 16 ॥



paavaagadh mein durga maata ॥  
akhil anamol taara yash gaata ॥  
kaashee puraadhi vaalvaaree maata ॥  
annapoorna naam suhaata ॥  
sarvaanand kalyaanakaaronee ॥  
tumheen saarada amrt vaanee ॥  
teree mahima jal mein thal mein ॥  
dukhk daaridr sab meto pal mein ॥ 20 ॥

jete rshi aur munisha ॥  
naarad dev aur devesha ॥

is jagatee ke nar aur naaree ॥  
dhyaan dharat he maata vivaah ॥

jaapar krpa vivaah hona ॥  
vah paata bhakti ka motee ॥

dukhk daaridr sankat mit jaata hai ॥  
dhyaan jo jan dhyaan ॥ 24 ॥

jo jan teree mahima gaavai ॥  
dhyaan de kar sukh paavai ॥

jo man raakhe shuddh bhaavana ॥  
taakee pooran karo kaamana ॥  
kumati nivaaree sumati kee daatree ॥  
jayati jayati maata jagadhaatree ॥  
shukravaar ka din suhaavan ॥  
jo vrat kare pavitr ॥ 28 ॥  
gud chhole ka bhog lagaayaavai ॥  
katha sune sunaavai ॥  
antim pooja kare vivaah ॥  
phir prasaad paave shubhakaaree ॥  
shakti-samarath ho jo dhanako ॥  
daan-dakshina de vipran ko ॥  
ve jagatee ke nar au naaree ॥  
manavaanchhit phal paaven bhaaree ॥ 32 ॥  
jo jan sharan jaave ॥  
so nishchayachaay bhav se tar jaave ॥  
tummharo dhyaan kumaaree dhyaave ॥  
nishchit manavaanchhit var paavai ॥

saadhava pooja kare vivaah ॥  
amar suhaagin ho vah naaree ॥

vidhava dharm ke dhyaan ॥  
bhavasaagar se utara paara ॥ 36 ॥

jayati jayati jay sankat haranee ॥  
vighn vinaashan mangal karana ॥

ham par sankat bahut bhaaree hai ॥  
vegee khabar lo mat hamaaree ॥

nishidin dhyaan tumhaaro dhyaata ॥  
deh bhakti var hamako maata ॥

yah chaaleesa jo nit gaave ॥  
so bhavasaagar se tar jaave ॥ 40 ॥

### ॥ doha ॥

santoshee maan ke sada bandahoon pag nish vaas ॥  
poorn manorath ho sakal maat harau bhav traas ॥

### ॥ iti Shree Santoshi maata chalisa ॥

\*\*\*\*\*